# बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
## बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)

## मौसम आधारित कृषि सलाह

**(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 83/2023) Year: 4th**

| जिला: बाँदा | जारी करने की तिथि: 01/06/2023 |
|---|---|

| क्रम सं | विभाग | सलाह |
|---|---|---|
| 1- | **शाक-भाजी** | ➢ ग्रीष्म कालीन कद्दू वर्गीय सब्जियों, बैगन, टमाटर पत्तेदार सब्जियों में समुचित मृदा नमी प्रबंधन करते हुए, खर- पतवार व रोग - कीट प्रबंधन करें।<br>➢ आवश्यक हो तो सूखी घास अथवा पुआल का पलावार प्रयोग करें ताकि मृदा नमी संरक्षण के साथ साथ खर- पतवार प्रबंधन भी हो जाए।<br>➢ कतारों व पौधों के बीच के रिक्त स्थान की गुड़ाई कर दें ताकि नमी संरक्षित रहे तथा फसल खर पतवार विहीन रहे।<br>➢ वर्षा ऋतु में सब्जियों की खेती के लिए खेत की ग्रीष्म कालीन जुताई कर दें ताकि खर पतवार तथा रोग कीट नष्ट हो जाए।<br>➢ वर्षा ऋतु हेतु टमाटर, बैगन, मिर्च आदि की पौधशाला बुआई कर दे या तैयारी कर लें। |
| | | |
| 2- | **शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन** | ➢ गर्मी की जुताई पूर्ण कर खेत को खुला छोड़ दें ताकि कीट के अंडे- बच्चे, रोगजनक एवं खरपतवार के बीज आदि नष्ट हो जायें।<br>➢ वर्षा से पूर्व खेत में अच्छी मेड़बन्दी कर देंए जिससे खेत की मिट्टी न बहे तथा खेत वर्षा का पानी सोख सके।<br>➢ उर्द, मूँग तथा चारे की फसलों में समय समय पर सिचाई करते रहें ।<br>➢ जायद में बोई गई उर्द की कटाई मड़ाई का कार्य तथा मूँग की फलियों की तुड़ाई का कार्य जून माह के अंत तक अवश्य पूरा कर लें।<br>➢ चारे के लिए ज्वार, लोबिया व बहुकटाई वाली चरी की बोआई कर दें।वर्षा न होने की दशा में पलेवा देकर बोआई की जा सकती है।<br>खरीफ फसलों की बोयाई के लिए अच्छे बीज, खाद आदि का प्रबंध समय पूर्व सुनिश्चित कर लें । |
| | | |
| 3- | **पशुपालन प्रबंधन** | ➢ इस महीने में तापमान की अधिकता एवं धूल भरी आँधी की प्रचुरता इस क्षेत्र में काफी आम है। जिस कारण मानव जीवन ही नहीं अपितु पशु पक्षीयों का जीवन भी प्रभवित हो रहा है।<br>➢ जानवरों में गर्मी से संबंधित रोग जैसे बुखार, निर्जलीकरण, शरीर के लवण में कमी, भूख में कमी और उत्पादकता में कमी इस दौरान जानवरों में देखे जा सकते हैं।<br>➢ जानवरों को तेज गर्मी व दोपहर की गर्म हवाओं (लू) इत्यादि से बचाया |

| | | |
|---|---|---|
| | | जाना चाहिए।<br>➢ पशुओं के चारे एवं भोजन में कमी न आये इस हेतु वर्तमान अवधि में चारा संग्रह, खरीद और भंडारण के लिए पर्याप्त प्रयास किए जाने चाहिए।<br>➢ पशुओं को शरीर के आवश्यक लवणों के क्षय से बचाने के लिए उपाय करने चाहिये। सुनिश्चित करें कि उचित मात्रा में नमक, चूना व खानिज मिश्रण भोजन के साथ दिया जाना चाहिये।<br>➢ दुधारू पशुओं को संतुलित आहार दें ताकि उनकी दूध उत्पादन क्षमता बढ़े। मौसम के आधार पर, पशु चारा की सामग्री को बदलना चाहिए। इस समय पशु भोजन में गेहूँ का दलिया या चोकर और ज्वार की मात्रा बढ़ाएँ।<br>➢ पशुओं को अन्तःपरजीवीनाशक व वाहयपरजीवीनाशक दवाइयॉ देनी चाहिये जिससे इन परजीवीयों का प्रसार न हो सके।<br>➢ मक्का, बारहमासी घास और अन्य चारा फसलों को चारे हेतु अभी काटा जाना चाहिए।<br>➢ इस महीने के दौरान भेड़ों से ऊन उतारने का कार्य भेड पालको को करना चाहिए। |
| 4– | **कीट–प्रबंधन** | ➢ मूँग/उर्द में फली बेधक कीट के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। जैविक नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिड़काव करना चाहिए अथवा एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1.25 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें अथवा स्पाइनोसैड 0.4 मिली0 प्रति ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।<br>➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया/कद्दू वर्गीय सब्जियों आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु हेतु पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें। थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी मे घोलकर 15 दिन के अंतराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें।<br>➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने मे घोल |

| | | |
|---|---|---|
| | | मे 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को एक सप्ताह तक शोधित कर कर ट्रैप लगाना चाहिये।<br>➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।<br>➢ दीमक के जैविक नियंत्रण हेतु ब्यूवेरिया वैसियाना 1.15 प्रतिशत बायोपेस्टीसाइड की 2.5 किग्रा0 मात्रा को 60–70 किग्रा0 गोबर की खाद में मिलाकर प्रति हे0 की दर से भूमि शोधन करना चाहिये।<br>➢ आम में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने मे घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाई वुड के टुकड़ों को शोधित कर ट्रैप लगाना चाहिये। 12–15 ट्रैप प्रति हे0 की दर से प्रयोग करें। |
| 5– | **पादप रोग प्रबंधन** | ➢ रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर जमीन को खुला छोड़ दें, ताकि सूर्य की तेज धूप से मिट्टी में छिपे कीड़ों के अण्डे, रोग जनक कवक के बीजाणु खरपतवार के बीज इत्यादि नष्ट हो जायें।<br>➢ धान की नर्सरी तैयार करने हेतु रोग रोधी प्रजातियो का चयन करें एवं प्रमाणित बीजों को बोएं।<br>➢ पौधशाला मे बीजो को बुवाई से पूर्व कार्बेन्डाजिम से 02 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज अथवा जैव कवकनाशी ट्राइकोडरमा से 05 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोएं। |
| | | |
| 6. | **बागवानी. प्रबंधन** | जून माह में अधिक गर्मी एवं शुष्क होने के कारण काफी सावधानियां अपनानी चाहिए। इस माह में फलों का अधिक गिरना, छालजलन, पत्तियों का झुलसा तथा सिंचाई की भी अधिक आवश्यकता होती है। यहां तक कि छोटे पौधों का झुलसा भी अक्सर देखा गया है। इस कारणवष बाग मालिकों को पौधों में सुचारू नमी बनाने की आवश्यकता है। भूमि की नमी को बनाये रखने के लिए भी आवश्यक कदम उठाने की जरूरत है। खरपतवार को भी निराई – गुड़ाई द्वारा या खरपतवारनाशी दवाओं द्वारा नियंत्रण में रखना चाहिये। नये बाग लगाने की योजना तथा रेखांकन कार्य भी इसी माह में करने की आवश्यकता है ऐसी परिस्थितियों में बताये जा रहे सुझावों के अनुरूप ही कार्य करें।नये बाग के रोपण हेतु प्रति गड्ढा 30–40 किग्रा सड़ी गोबर की खाद, एक किग्रा नीम की खली तथा आधी गड्ढे से निकली मिट्टी मिलाकर भरें। गड्ढे को जमीन से 15–20 सेमी. ऊँचाई तक भरना चाहिए।<br>केला की रोपाई के लिए उपयुक्त समय है। रोपण हेतु तीन माह पुरानी, तलवारनुमा, स्वस्थ व रोगमुक्त पुत्ती का ही प्रयोग करें। पुत्तीयों के ऊपरी तानें की कंद से 25 से 30 सेंटीमीटर पर काट दें। रोपाई से पूर्व सभी पुत्तीयों को 1 ग्राम बविस्टीन प्रति लीटर पानी के घोल में उपचारित कर ले। रोपाई के समय केवल कंद |

भाग को ही मिट्टी में दबाए तथा रोपाई के बाद सिंचाई कर दें। पपीते में सितंबर–अक्टूबर में लगाए गए पौधों में अतिरिक्त नर पौधों को निकाल दे। पुराने बागों में इंटरक्रॉपिंग के रूप में हल्दी व अदरक बोआई करें। बेर में कटाई–छटाई का कार्य कर ले। आम में ग्राफ्टिंग का कार्य करें।

**तेज गर्मी से बचाव :–**

तेज गर्मी से बचने के लिए पौधों के मुख्य तने पर चूने तथा नीले थोथे का लेप करें। घोल बनाने के लिए कापर सल्फेट 2.5 किलोग्राम, बुझा हुआ चूना 5 किलोग्राम, सरेश 1/2 किलोग्राम तथा पानी 30 लीटर प्रयोग करें। यदि बाग में जंतर या ढैंचा है तो पानी देकर इसकी बढ़वार बढ़ा दें।

**सिंचाई व्यवस्था :–**

अत्यधिक गर्मी के कारण पानी की मात्रा को पौधो में बनाए रखने के लिये सिंचाई पंद्रह दिन के अन्तराल पर अवश्य दें। यदि बूंद–बंदू सिंचाई द्वारा बाग चलाया जा रहा है तो उसकी उम्र के हिसाब में निम्नलिखित मात्रा में पानी दे। ऐसा करने से फलों का गिरना भी रूक जाएगा। बाग में पानी हमेशा शाम होने के बाद लगायें तथा गलत दिशा में बह रहे पानी से होने वाले नुकसान का पूरा ध्यान रखें। पानी की उपलब्धता के अनुरूप ही बाग का विस्तार किया जाना चाहिये।

**मलचिंग द्वारा भूमि जल संरक्षण :–**

भूमि को पॉलीथिन शीट द्वारा, पराली द्वारा, चने के नीरे द्वारा या भुई द्वारा ढकने से भूमि जल को वाष्पीकृत होने से बचाया जा सकता है। परन्तु ध्यान रहे कि पराली वगैरह से ढकने पर सूख होने के कारण इसमें आग लगने या दीमक के आने की संभावना रहती है। अतः इससे बचने के लिए सावधानी बरतें।

**बाग में हल जोतना :–**

जून माह में बाग की भूमि को जोतना अतिआवश्यक है ताकि खरपतवारों का पूरी तरह से नष्ट किया जा सके तथा भूमि की ऊपरी परत ढीली करने पर यह मल्च का काम करें। ऐसा करने पर कीट व्याधि पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है।

नींबू प्रजाति के बागो में खरपतवार नियंत्रण के लिए खरपतवारनाशी दवाओं का प्रयोग भी किया जा सकता है।

**नर्सरी (पौधशाला) के कार्य :–**

1. सिंगल स्टेम ट्रेनिंग :– नींबू प्रजाति में खट्टी को सधाई देने के लिए सभी फुटान को हटा दें। (शीर्ष फुटान को छोड़कर) ताकि बरसात के मौसम में इस पर बडिंग या ग्राफिटिंग की जा सकें।
2. बारामासी नींबू की 2.5 सेमी हार्डवुड टहनियों को पांच से आठ इन्च लम्बी काटकर इस माह के अंत में लगा दें।
3. फालसे का बीज भी इस माह के दूसरे पखवाड़े में क्यारियों में बीज दें।
4. पौधशाला में हर दूसरी सिंचाई के उपरान्त निराई–गुड़ाई अवश्य करें।
5. आम और अमरूद के पौधों में बरसात में इनार्चिंग कराने के लिए बीजू पोधों को गमले में लगा देवें ताकि एक से डेढ महीने बाद इन पौधों पर पैबन्दी (प्रवर्धन) किया जा सके। फल पौधों पर 0.6 प्रतिषत बोरक्स का छिड़काव करें।
6. बेर में 15 जून तक पौधों की वार्षिक कॉट–छाँट करावें। गमले की सफाई कराकर गोबर की खाद एवं उर्वरक देकर सिंचाई करें प्रति पेड़ लगभग 60–80 किलोग्राम गोबर की सड़ी खाद डाले। सुपर 100 ग्राम

| | | |
|---|---|---|
| | | से 500 ग्राम (पौधे की आयु) के हिसाब से दे।<br>7. नीम्बूवर्गीय फलः फलदार पदों में नाईट्रोजन व पोटाश की दूसरी मात्र का प्रयोग करें।<br>8. अंगूर की फसल में पक्के हुए गुच्छों को तुड़ाई कराकर प्रत्येक गुच्छे में से सडे फल तथा कच्चे फल की काँट छांट–कर बाजार में बेचें। नई बेल में 80–90 ग्राम यूरिया प्रति बेल हर दूसरी सिंचाई पर देते रहे व फालतू बढ़वार रोकते रहे।<br>9. अमरूद के नये पौधें को गर्मी व लू से बचाये और सिंचाई अवष्य करें।<br>10. आड़ू के नये पौधे के तने के साथ मिट्टी अवष्य चढ़ायें।<br>11. बागो में सिंचाई नियमित रूप से करते रहे। छोटे पौधों को गर्मी व लू से बचायें। |
| 7. | **वानिकी प्रबंधन** | ➢ पौधशाला में सभी पौध जैसे शीशम, सागौन, अर्जुन, जामुन, अमलतास, नीम, इमली, खैर, कटहल, बांस, करंज, चिरौंजी इत्यादि की उचित देखभाल (निराई गुड़ाई टहनियों की छटाई) करते हुए शाम के समय ही सिंचाई करें।<br>➢ नर्सरी (पॉलिथीन) थैलियों में भरे जाने वाले पॉटिंग मिश्रण में खाद / कंपोस्ट खाद, बालू व छनी हुई मिट्टी का अनुपात क्रमशः 1:2:3 रखें, यदि चिकनी मिट्टी की मात्रा अधिक है तो उसमें बालू रेत की मात्रा को आवश्यकता अनुसार बढ़ा दे। |

## वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

| | |
|---|---|
| 1. डॉ जी. एस. पंवार | 7. डॉ मयंक दुबे |
| 2. डॉ दिनेश साह | 8. डॉ अमित मिश्रा |
| 3. डॉ ए.सी. मिश्रा | 9. डॉ दिनेश गुप्ता |
| 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव | 10. डॉ पंकज कुमार ओझा |
| 5. डॉ राकेश पाण्डेय | 11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह |
| 6. डॉ विवेक सिंह | |